श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र

श्रीरामचरितमानस एक महाकाव्य ही नहीं, बल्कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम का ग्रन्थावतार है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे आदि सशक्त मंत्रों का संकलन है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे, सोरठे सभी सरल मंत्र हैं। संस्कृत के मंत्र कठिन होते हैं, इससे हर एक को उनके उच्चारण में सुगमता नहीं होती, इसलिये जापक का मन उनमें पूरा नहीं लगता। साबर–मंत्र रूखे और कठिन शब्दावली से भरे होते हैं। उनमें भी मन नहीं लगता, परन्तु श्रीरामचरितमानस के ये मंत्र सरल, सरस और सार्थक हैं। जापक इनमें तन्मय हो जाता है। इच्छाशक्ति तल्लीन हो जाती है। इससे मनवांछित फल शीघ्र प्राप्त होता है।

रक्षा-रेखा :

मन्त्र सिद्ध करने के लिये या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात्रि व्यतीत करने के लिये अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए। लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटी के आसपास जो रक्षा रेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर निम्नांकित रक्षा-मन्त्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिए।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक।।

इन मंत्रों को सिद्ध करके उनका जप करना अथवा मानस पाठ करते समय दोहा/सोरठा एवं चौपाइयों के बीच संपुट लगाने से इष्ट फल की अवश्य ही प्राप्ति होती है। मंत्र सिद्ध करने के लिए उपयुक्त मुहूर्त में रात्रि 10 बजे के बाद अष्टांग हवन सामग्री से इष्ट चौपाई अथवा दोहा/सोरठा से 108 आहुतियाँ देनी चाहिए। अष्टांग हवन सामग्री में चन्दन का बुरादा, तिल, शुद्ध घी, शक्कर, अगर, तगर, कपूर, शुद्ध केशर, नागर मोथा, पंच मेवा, जौ और चावल आते हैं। एक दिन हवन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मंत्र (दोहा/चौपाई आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिए, पर किसी भी स्थिति में 21 बार से कम जप न हो, इसका ध्यान रखें। सामान्यतया सवा लाख जप किया जाता है, पर इससे पहले ही यदि कार्य सिद्ध हो जाए तब भी अनुष्ठान पूरा करना चाहिए और जीवन पर्यन्त उस मंत्र को रोज स्मरण कर लेना चाहिए, ताकि मंत्र सिद्ध रहे।

इस सम्बन्ध में निम्नांकित नियम महत्वपूर्ण हैं :

1. पूर्ण श्रद्धा–विश्वास एवं समर्पण भाव से जप करें।
2. वाराणसी में भगवान शंकरजी ने मानस की चौपाइयों को मन्त्र शक्ति प्रदान की है, इसलिये वाराणसी की ओर मुख करके शंकरजी को साक्षी मानकर श्रद्धा से जप करना चाहिये।
3. जिस उद्देश्य के लिये जो चौपाई, दोहा या सोरठा जप करना बताया गया है, उसको सिद्ध करने के

लिये अष्टांग हवन की सामग्री से उसी चौपाई, दोहे या सोरठे के द्वारा 108 आहुतियाँ देनी चाहिये। यह हवन केवल एक ही दिन करना है। शुद्ध मिट्टी की वेदी बनाकर उस पर अग्नि स्थापित करके उसमें आहुति देनी चाहिये। प्रत्येक आहुति के साथ चौपाई, दोहा, सोरठा आदि के अन्त में 'स्वाहा' बोलना चाहिये।

4. प्रत्येक आहुति लगभग 10 ग्राम की (सब चीजें मिलाकर) होनी चाहिये। इस हिसाब से 108 आहुति के लिये लगभग एक किलोग्राम सामग्री सब चीजें मिलाकर बना लेनी चाहिये। कोई चीज कम–ज्यादा हो तो कुछ आपत्ति नहीं। पंचमेवा में पिस्ता, बादाम, किशमिश (द्राक्षा), अखरोट और काजू ले सकते हैं। इनमें से कोई चीज न मिले तो उसके बदले में मिस्री मिला सकते हैं। केसर शुद्ध 3 ग्राम ही डालने से काम चल जायेगा, अधिक की आवश्यकता नहीं है।
5. हवन करते समय माला रखने की आवश्यकता एक सौ आठ की संख्या गिनने भर के लिये है। माला रखने में असुविधा हो तो गेहूँ, जौ या चावल आदि के 108 दाने रखकर उनसे गिनती की जा सकती है। करमाला का उपयोग भी कर सकते हैं।
6. बैठने के लिये आसन ऊन का अथवा कुशा का होना चाहिये।
7. मन्त्र सिद्ध करने के लिये यदि लंकाकाण्ड की चौपाई या दोहा हो तो उसका हवन शनिवार को करना चाहिये। दूसरे काण्डों के चौपाई–दोहे किसी भी दिन उपयुक्त मुहूर्त में हवन करके सिद्ध किये जा सकते हैं।
8. एक दिन हवन करने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मन्त्र (चौपाई–दोहे आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को, जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिये, अधिक कर सकें तो अधिक उत्तम। आप चाहें तो नियमित जप के अलावा भी दिनभर चलते–फिरते हुए उस चौपाई या दोहे का जप कर सकते हैं। जितना अधिक जप हो, उतना ही उत्तम है।
9. कोई दो तीन कार्यों के लिये दो तीन मन्त्रों का अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं, पर उन मन्त्रों को पहले अलग–अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिये। हवन के द्वारा एक ही दिन में दो या तीन मंत्रों को सिद्ध कर सकते हैं।
10. स्त्रियाँ भी इस अनुष्ठान को कर सकती हैं, परन्तु रजस्वला होने की स्थिति में जप नहीं करना चाहिये। इस अवस्था में हवन भी नहीं करना चाहिये।
11. जप करते समय मन में यह विश्वास अवश्य रखना चाहिये कि भगवान श्रीसीताराम की अहैतुकी कृपा से मेरा कार्य अवश्य सफल होगा। विश्वासपूर्वक जप करने पर सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी।

12. अधिकांश मंत्र तथा उपर्युक्त नियम कल्याण के मासिक अंकों से लिए गए हैं।

13. जप करते समय यदि निम्नांकित बिन्दुओं का पालन करें तो सफलता शीघ्रता से प्राप्त होगी :

(क) जप सूर्योदय से पूर्व करें।

(ख) पूर्व की ओर अथवा वाराणसी की ओर मुँह करके जप करें।

(ग) ऊन के आसन पर बैठें।

(घ) अपने सामने श्रीरामदरबार का चित्र रखें। एक लोटा जल अपने बाईं ओर रखें जिसे जप के पश्चात किसी पौधे में डाल दें या सूर्य को अर्घ्य दें।

(ङ) अपने दाईं ओर घी का दीपक जला कर रखें।

विभिन्न कामनाओं की प्राप्ति हेतु मानस के कुछ सिद्ध मंत्र इस प्रकार हैं –

1. **असमंजस की स्थिति में परम कल्याण हेतु**

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।। (1/132/7)

2. **शरणागत होकर संकट निवारणार्थ**

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सोइ होऊ।। (1/132/2)

3. **सर्व मंगल कामना हेतु**

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी।। (1/112/4)

4. **श्रेष्ठ भक्ति की कामना**

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें।। (2/102/7)

5. **मानस का गायत्री मन्त्र**

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।। (1/18/7–8)

6. **संकट नाश के लिए**

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।। (5/27/4)

7. **जीविका प्राप्ति के लिए**

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।। (1/197/7)

8. **लक्ष्मी प्राप्ति हेतु**

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ। धरम सील पहिं जाहिं सुभाएँ।। (1/294/2–3)

9. **शत्रुता नाश के लिए**

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।। (7/20/8)

10. **यात्रा की सफलता के लिए**

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।। (5/5/1)

11. **परीक्षा में पास होने के लिए**

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कवि उर अजिर नचावहिं बानी।। (1/105/6)
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहि कृपाँ अघाती।। (1/28/3)

12. **विद्या प्राप्ति के लिए**

गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल विद्या सब आई।। (1/204/4)

13. **प्रेम बढ़ाने के लिए**

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।। (7/21/2)

14. **विविध रोगों एवं उपद्रवों की शांति के लिए**

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।। (7/21/1)

15. **ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिए**

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता।। (1/285/6)

16. **मन पसन्द वर की प्राप्ति हेतु**

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।। (1/236/7)

17. **मन पसन्द वधू की प्राप्ति हेतु**

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।। (1/237/4)

18. **अपने इष्ट की प्राप्ति हेतु**

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।। (1/259/6)

19. **विपत्ति नाश हेतु**

राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक।। (1/18/10)

20. **भूत-प्रेत भगाने हेतु**

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।। (1/17)

21. दरिद्रता नाश के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दबारि के।। (1/32/8)

22. सन्तान प्राप्ति के लिए

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।। (1/193/3)
प्रेम मगन कौसल्या, निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।। (1/200)

23. सुख सम्पत्ति प्राप्ति हेतु

जे सकाम नर सुनहि जे गावहिं। सुख सम्पति नाना विधि पावहिं।। (7/15/3)

24. मुकदमा जीतने के लिए

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।। (4/30/4)

25. शत्रु को मित्र बनाने हेतु

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।। (5/5/2)

26. निन्दा निवृत्ति के लिए

रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी।। (2/317/3)

27. विघ्न विनाश के लिए

सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही।। (1/39/5)

28. अकाल मृत्यु के निवारण के लिए

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। (5/30)

29. नजर झाड़ने के लिए

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी।। (1/118/5)

30. खोयी हुई चीज पुनः प्राप्त करने के लिए

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।। (1/13/7)

31. ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने के लिए

साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।। (1/22/4)

32. उत्सव के अवसर प्राप्त करने के लिए

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु।। (1/361)

33. मनवांछित जीवनसाथी की प्राप्ति के लिए

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।। (1/259/6)

34. विरक्ति तथा श्रीसीताराम चरणों में प्रेम प्राप्ति के लिए

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।। (2/326)

35. ज्ञान प्राप्ति के लिए

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।। (4/11/4)

36. भक्ति की प्राप्ति के लिए

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम।। (7/84 ख)

37. श्रीहनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।। (1/26/6)

38. श्रीसीतारामजी के दर्शन के लिए

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम।। (1/146)

39. सहज स्वरूप दर्शन के लिए

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।। (1/146/8)

40. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से शरीर त्याग करने के लिए

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग।। (4/10)

41. संशय निवृत्ति के लिए

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।। (1/114/1)

42. प्रभु-प्रेम में निरन्तर वृद्धि के लिए

सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें।। (2/205/2)

43. सुखद एवं ऐश्वर्यपूर्ण यात्रा के लिए

चलत बिमानु कोलाहल होई। जय रघुबीर कहइ सबु कोई। (7/119/3)

श्रीरामशलाका-प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्रायः सभी मानस प्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर–फलों का उल्लेख कर दिया जाता हैं। श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार है–

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	व	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म*	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	इ	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह्व	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	ष	म	खि	जि	मनि	त	जं
सिं	मु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ढ़	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	हिं	र	त	न	ष	ा	ज	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	जा	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका–प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान करना चाहिये।

तदनन्तर श्रद्धा–विश्वास पूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अंगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाये। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है, उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े, उसे भी लिख लेना चाहिये। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर को क्रम से लिखते जाना चाहिये और तब तक लिखते जाना चाहिये, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अंगुली अथवा शलाका न पहुँच जाये। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते–पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायेगी, ये प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि किसी–किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी–किसी कोष्ठक में दो–दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिये। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे, वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे, वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई निकाल दी जाती है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'म' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रक्खा और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन–गिनकर लिखता गया तो उत्तर स्वरूप चौपाई बन जायेगी–

हो इ है सो ई जो रा म * र चि रा खा । को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा षा ।।

यह चौपाई बालकाण्डान्र्तगत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तर स्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होने में संदेह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

1. सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में श्री सीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरी जी ने श्रीसीता जी को आशीर्वाद दिया है।

फल– प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

2. प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

स्थान– यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– भगवान का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

तदनन्तर श्रद्धा–विश्वास पूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अंगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाये। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है, उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े, उसे भी लिख लेना चाहिये। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर को क्रम से लिखते जाना चाहिये और तब तक लिखते जाना चाहिये, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अंगुली अथवा शलाका न पहुँच जाये। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते–पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायेगी, ये प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि किसी–किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी–किसी कोष्ठक में दो–दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिये। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे, वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे, वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई निकाल दी जाती है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'म' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रक्खा और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन–गिनकर लिखता गया तो उत्तर स्वरूप चौपाई बन जायेगी–

हो इ है सो ई जो रा म * र चि रा खा । को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा षा ।।

यह चौपाई बालकाण्डान्र्तगत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तर स्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होने में संदेह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

1. सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में श्री सीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरी जी ने श्रीसीता जी को आशीर्वाद दिया है।

फल– प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

2. प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

स्थान– यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– भगवान का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

विक्रम संवत् 2075 वर्ष की प्रमुख तिथियाँ - एक दृष्टि में

मास/पक्ष	गणेश चतुर्थी	एकादशी (स्मार्त)	प्रदोष	मास शिवरात्रि	अमावस्या	पूर्णिमा	सत्य0 व्रत	संक्रान्ति
चैत्र शुक्ल	–	27.03.18	29.03.18	–	–	31.03.18	30.03.18	–
वैशाख कृष्ण	03.04.18	12.04.18	13.04.18	14.04.18	16.04.18	–	–	14.04.18
वैशाख शुक्ल	–	26.04.18	27.04.18	–	–	30.04.18	29.04.18	–
ज्येष्ठ–शु कृष्ण	03.05.18	11.05.18	26.05.18	13.05.18	15.05.18	–	–	14.05.18
ज्येष्ठ–अ शुक्ल	–	25.05.18	11.06.18	–	–	29.05.18	29.05.18	–
ज्येष्ठ–अ कृष्ण	02.06.18	10.06.18	25.06.18	11.06.18	13.06.18	–	–	–
ज्येष्ठ–शु शुक्ल	–	23.06.18	10.07.18	–	–	28.06.18	27.06.18	15.06.18
आषाढ़ कृष्ण	01.07.18	09.07.18	25.07.18	11.07.18	13.07.18	–	–	–
आषाढ़ शुक्ल	–	23.07.18	09.08.18	–	–	27.07.18	27.07.18	16.07.18
श्रावण कृष्ण	31.07.18	07.08.18	23.08.18	09.08.18	11.08.18	–	–	–
श्रावण शुक्ल	14.08.18	22.08.18	07.09.18	–	–	26.08.18	25.08.18	17.08.18
भाद्रपद कृष्ण	30.08.18	06.09.18	22.09.18	08.09.18	09.09.18	–	–	–
भाद्रपद शुक्ल	13.09.18	20.09.18	06.10.18	–	–	25.09.18	24.09.18	17.09.18
आश्विन कृष्ण	28.09.18	05.10.18	22.10.18	07.10.18	09.10.18	–	–	–
आश्विन शुक्ल	–	20.10.18	05.11.18	–	–	24.10.18	24.10.18	17.10.18
कार्तिक कृष्ण	27.10.18	03.11.18	20.11.18	05.11.18	07.11.18	–	–	–
कार्तिक शुक्ल	–	19.11.18	04.12.18	–	–	23.11.18	22.11.18	16.11.18
मार्गशीर्ष कृष्ण	26.11.18	03.12.18	20.12.18	05.12.18	07.12.18	–	–	–
मार्गशीर्ष शुक्ल	11.12.18	18.12.18	03.01.19	–	–	22.12.18	22.12.18	16.12.18
पौष कृष्ण	25.12.18	01.01.18	18.01.19	04.01.19	05.01.19	–	–	–
पौष शुक्ल	–	17.01.19	02.02.19	–	–	21.01.19	20.01.19	14.01.19
माघ कृष्ण	24.01.19	31.01.19	17.02.19	02.02.19	04.02.19	–	–	–
माघ शुक्ल	08.02.19	16.02.19	03.03.19	–	–	19.02.19	19.02.19	13.02.19
फाल्गुन कृष्ण	22.02.19	02.03.19	18.03.19	04.03.19	06.03.19	–	–	–
फाल्गुन शुक्ल	–	17.03.19	27.02.19	–	–	21.03.19	20.03.19	14.03.19
चैत्र कृष्ण	24.03.19	31.03.19	02.04.19	03.04.19	05.04.19	–	–	–